International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 04, April 2020
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राजस्थानी चित्रकला में अजमेर की लघु चित्र शैली का योगदान

डॉ. पवन कुमार जांगिड़
सहायक आचार्य - चित्रकला
चित्रकला विभाग, श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किशनगढ़

राजस्थान की लघु चित्रकला ने सम्पूर्ण विश्व में अपनी अनूठी पहचान बनायी है। राजस्थान की चित्रकला में समाहित सभी प्रकार की चित्र शैलियों में श्रेष्ठ चित्रों का चित्रण किया गया है जिसमें से प्रमुख लघु चित्र शैली अजमेर भी है। अजमेर की लघु चित्र शैली में भी कलाकारों ने बेहतरीन कार्य किया है हालांकि इस चित्र शैली का जिक्र बहुत कम देखने को मिलता है किन्तु राजस्थान की चित्रकला में जो अमूल्य योगदान अजमेर की चित्रकला का है उसे भुलाया नहीं जा सकता। अजमेर की चित्रकला परंपरा ने किशनगढ़ एवं रूपनगढ़ की चित्रकला को प्रभावित किया है। अजमेर के कलाकार चाँद द्वारा निर्मित चित्र अजमेर शैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। अजमेर के भिणाय, मसूदा ठिकाणों पर उपलब्ध चित्र आज भी अजमेर की कला का सौन्दर्य प्रस्तुत करते हैं।

मुख्य शब्द –लघु चित्र शैली, परंपरा, शैलियां, अजयमेरु, ठिकाना, राजस्थान की कुंजी, परिलक्षित, संग्रहालय, विकास, उथल-पुथल।

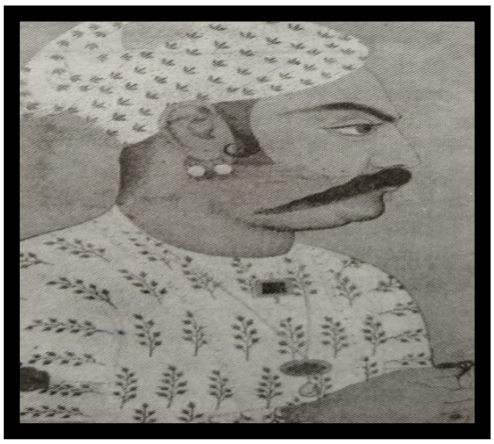

चित्र –'राजा पाबू जी' अजमेर चित्र शैली, चाँद कलाकार

प्रस्तावना – मानवीय भावनाओं की सरल अभिव्यक्ति के माध्यम से उत्पन्न पाषाण कालीन चित्रकला ने निरंतर अपने विकास-क्रम के दौरान कई वादों, शैलियों, माध्यमों में अपने स्वरूप को बदलते हुये देखा है तथा आगे भी ये बदलता हुआ क्रम जारी रहेगा लेकिन हम हजारों वर्षों से इस पूरे दौर में 15वी से 18वी सदी के मध्य पनपी भारत की लघु चित्रकला पर अपना ध्यान केन्द्रित करेगें।

भारत की लघु चित्रकला में अजंता, अपभ्रंश, मुगल, कांगड़ा एवं राजस्थानी जैसी कई कलाओं का विकास हुआ लेकिन इस बीच राजस्थानी चित्रकला ने इन सभी कलाओं के प्रभाव अपने भीतर समेटे हुये विकास की तरफ बढ़ती रही। राजस्थान की चित्रकला ने सत्रहवी से अठारहवी सदी के मध्य अपने चरम विकास को पाया। राजस्थानी शैली के विकास क्रम में यहाँ की संस्कृति का प्रमुख स्थान रहा है। राजस्थानी लघु चित्रण परम्परा का विकास विभिन्न स्कूलों, रियासतों, शैलियों के साथ-साथ प्राकृतिक एवं भौगोलिक संरचना और उपशैलियों में पल्लवित होता हुआ सत्रहवीं-अठारहवीं सदी में अपने चरम पर पहुंचा। मेवाड़, मारवाड़, ढूंढाड़ और हाडौती में विभक्त इन चार शैलियों की भौगोलिक संरचना और राजपूत राजाओं की सांस्कृतिक परम्परा यहाँ के लघु चित्रण में सहज ही दिखाई पड़ती है। गीत-गोविन्द के चित्रण ने मेवाड़ कलम को विकसित किया। मारवाड़ कला का विकास मूलतः जोधपुर दरबारी शैली के रूप में भी देखा जा सकता है। इनके प्रारम्भिक लघु चित्रों में ओधनिर्युक्तिवृति (1060 ई.), ज्ञातसूत्र (1130 ई.), पंचशिखाप्रकरणकृति , पाण्डवचरित्र (1418 ई.), 'कल्पसूत्र' प्रमुख रहे हैं। राजस्थानी सांस्कृतिक चित्रण परम्परा में किशनगढ़ शैली का प्रमुख स्थान रहा है। 'नागरीदास' की रसिकता एवं माधुर्य में बनी-ठनी संसार प्रसिद्ध है। श्याम-श्यामा के रतिभाव के विभिन्न आयाम ही किशनगढ़ शैली के प्रमुख विषय रह हैं। राधा-कृष्ण तथा भाव चित्रण पर आधारित गीत-गोविन्द, भागवत पुराण एवं रूक्मिणी हरण, नागरीदास के पद, राजसी वैभव, नौका-विहार और प्राकृतिक सौन्दर्य बोध यहाँ के लघु चित्रों में दिखाई देता है पारदर्शी वेशभूषा नागौर-शैली की अपनी निजी विशेषता रही है। जैसलमेर का 'जिन भद्रसूरी ज्ञान भण्डार' के साथ ही ताड़पत्रीय ग्रंथों, हस्थ लिखित ग्रंथों और चित्र पट्टिकाओं के विशा भण्डार भारतीय कला संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। ढूँढाड कलम में राधा-कृष्ण से संबंधित चित्र, नायिका-भेद, राग-रागिनी, बारहमासा नामक विषयों का सृजन किया गया है। चौहान वंशीय हाड़ाओं का शासन कोटा - बून्दी, झालावाड़ क्षेत्रों में होने के कारण यह क्षेत्र हाड़ौती कहलाता है। बुन्दी के लघु चित्रों में राग-रागिनी, नायिका-भेद, कृष्ण-लीला, रसराज परम्परा के लघु चित्र इस काल में सृजित हुये। कोटा कलम में शिकार दृश्यों के अतिरिक्त रागमाला, बारहमासा, नायक-नायिका भेद, कृष्ण-लीला से संबंधित लघु चित्र और वल्लभोत्सव चंद्रिका एवं गीता-पंचमेल नामक ग्रंथ कोटा शैली की अनुपम देन है। राजस्थानी संस्कृति में लघु चित्रण और कला का क्षेत्र समग्र सृष्टि से उसकी कार्यस्थली है। राजस्थानी लघु चित्रण में कला का विकास कला के लिये न होकर आत्मस्वरूप के साक्षात्कार या उसे परमतत्व की ओर उन्मुख करने के लिये हुआ है।

अजमेर का इतिहास– अजमेर राजस्थान की राजधानी जयपूर से लगभग 135 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तथा भारत की राजधानी दिल्ली से अजमेर की दूरी लगभग 405 किलोमीटर है।[1] भारत का सबसे सुंदर नगर अजमेर अरावली पर्वत श्रेणी से घिरा हुआ नगर 26°-27' उत्तरी अक्षांश एवं 74°-37 " पूर्वी देशान्तर पर स्थित है।[2] भौगोलिक, ऐतिहासिक और धार्मिक

दृष्टि से अजमेर की राजस्थान में महत्त्वपूर्ण स्थिति रही है, इसी के फलस्वरूप यहाँ कला और संस्कृति का समन्वयात्मक स्वरूप उभर कर आया कर्नल टॉड ने इसे 'राजस्थान की कुंजी' कहा है।[3] अजमेर को मुख्यत से अजयमेरु के नाम से जाना जाता था तथा यहां की स्थापना 11वीं सदी के चहमाण शासक अजयदेव ने की थी। इतिहासकार दशरथ शर्मा ने नोट किया कि शहर के नाम का सबसे पहला उल्लेख पल्हा की पट्टावली में मिलता है। अजमेर की स्थापना 1113 ई. से कुछ समय पहले हुई थी। विग्रहराज चतुर्थ द्वारा जारी एक प्रशस्ति में पाया गया कि अजयदेव ने अपना निवास अजमेर में स्थानांतरित कर दिया।[4] 8वीं शताब्दी के राजा अजयराज प्रथम थे जिन्होंने अजयमेरु किले को बसाया था, जिसे बाद में अजमेर के तारागढ़ किले के रूप में जाना जाने लगा।1193 ईस्वी में अजमेर को दिल्ली सल्तनत के मामलुक द्वारा कब्जा कर लिया गया था। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती महान् सूफी संत हुए, जिन्होंने अजमेर को सूफियाना रंग में रंगकर धार्मिक समन्वय स्थापित किया। कुछ समय पश्चात श्रद्धांजलि की शर्त के तहत राजपूत शासकों को वापस कर दिया गया था।

1556 में मुगल सम्राट अकबर द्वारा विजय प्राप्त करने के बाद अजमेर मुगल साम्राज्य के अधीन आ गया। मुगलों द्वारा राजपूत शासकों के खिलाफ अभियानों के लिए शहर को एक सैन्य अड्डे के रूप में भी इस्तेमाल किया गया था और कई अवसरों पर एक अभियान के सफल होने पर उत्सव का स्थल भी बन गया। मुगलों के काल में अकबर ने एक कुशल शासक के रूप में शासन किया तथा अकबर ने अजमेर के दरगाह शरीफ में पदार्पण किया और यह क्रम पीढ़ियों तक धर्म एवं राजनीति के बहाने चलता रहा। प्रथम पुत्र की प्राप्ति के बाद सन् 1570 ई. में अकबर आगरा से पैदल चलकर उर्स में सम्मिलित होने के लिए अजमेर आये एवं अकबरी मस्जिद का निर्माण कराया। सन् 1613 से 1616 ई. के बीच जहाँगीर ने अपना अधिकतर समय अजमेर में व्यतीत किया। शाहजहाँ और औरंगजेब ने भी अपनी गतिविधियों का केन्द्र अजमेर को बनाये रखा। इस प्रकार मक्का-मदीना के उपरान्त दरगाह शरीफ, मुस्लिम संस्कृति का महत्त्वपूर्ण धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र बन गया। औरंगजेब के शासन के अंत के बाद शहर का मुगल संरक्षण समाप्त हो गया तथा इसके उपरांत मराठा साम्राज्य ने शहर पर विजय प्राप्त की। 1881 मे अंग्रेज़ो ने अपना आधिपत्य स्थापित किया। स्वतंत्रता के समय तक अजमेर स्वयं के विधायिका के साथ एक अलग राज्य के रूप में रहा जब तक कि तत्कालिक राजपुताना प्रांत के साथ विलय नहीं हुआ जिसे राजस्थान कहा जाता था। अजमेर राज्य के 30 विधायक थे एवं हरिभाऊ उपाध्याय तत्कालीन राज्य के पहले मुख्यमंत्री थे। भागीरथ चौधरी पहले विधानसभा अध्यक्ष बने। 1956 में फाजिल अली के प्रस्ताव को स्वीकार करने के बाद अजमेर का राजस्थान में विलय कर जयपुर जिले के किशनगढ़ उप-मंडल के साथ अजमेर जिला बनाया गया।

अजमेर की लघु चित्रकला का विकास - राजस्थान का हृदय कहे जाने वाले अजमेर में चहमान, मामूलक, राजपूत, मुगल, मराठा एवं अंग्रेज़ों का अधिकार रहा, जिसमें से लगभग आधी शताब्दी तक मराठाओं ने और 121 वर्ष तक अंग्रेजों ने अजमेर को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाये रखा। इस प्रकार हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई संस्कृति का समन्वयात्मक स्वरूप अजमेर में प्रारम्भ से ही देखने को मिलता है। इसका सीधा प्रभाव स्थानीय कलाओं पर ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण राजस्थान की कलात्मक गतिविधियों पर भी पड़ा। मुगल काल में अजमेर की चित्रकला व अन्य कलाओं का विकास भी देखने को मिलता है। महान मुगल शासक अकबर के समय चित्रित अकबरनामा में बहुत से ऐसे चित्र भी हैं, जो अकबरी दरबार के प्रसिद्ध चित्रकार बसावन तथा नन्दग्वालियरी द्वारा चित्रित किये गये हैं, जिनमें अकबर महान् की दलबल सहित पैदल यात्रा और दरगाह शरीफ में जियारत को प्रदर्शित किया गया है। जहाँगीर और शाहजहाँ के समय में मुगलिया बन्दोबस्त के कारण बहुत से मुगल शैली के चित्रकारों का भी यहाँ संतरण होता रहा।

अजमेर की कला पर जहाँगीरी प्रभाव और शाहजहाँ के समय का बारीक पच्चीकारी, मीनाकारी जैसा कार्य भी चित्रण में समाविष्ट हो गया। शाहजहाँ के समय में जोधपुर के राठौरों की परम्परा से सन् 1690 में किशनगढ़ स्टेट का आविर्भाव हुआ, जिसके फलस्वरूप अजमेर शैली की परम्परा ने किशनगढ़ और रूपनगढ़ की कला को भी प्रभावित किया।[5] औरंगजेब की कट्टर नीति के कारण धीरे-धीरे राजस्थान पर मुगल सल्तनत का प्रभाव कम होने लगा। मुगल साम्राज्य की पतित होती अवस्था के दौरान अजमेर पर जोधपुर के राजाओं का आधिपत्य हो गया इस कारण सन् 1707 ई. में महाराजा अजीत सिंह के समय से अजमेर कलम पर जोधपुर शैली का प्रभाव परिलक्षित होता है। अजमेर की लघु चित्रकला के चित्रों का संग्रहण कुँवर संग्राम सिंह के निजी संग्राहालय मे उपलब्ध है। इन चित्रों को स्वयं संग्राम सिंह ने चित्रकला की दुनिया में सामने लाया।[6] अजमेर की चित्रकला मारवाड़ की सांस्कृतिक परम्परा से अक्षुण्ण रूप मे जुड़ी रही। अजमेर की सीमा पर लगे हुए बदनोर, टोडारायसिंह एवं सांवर जैसे स्थानों पर भी अजमेर शैली की परम्परा में विकसित हुई।[7] इस्तमरारी बन्दोबस्त के कारण आसपास के ठिकाणे प्रभावशाली हो गये तथा वहाँ भी स्वतंत्र रूप से चित्रकला विकसित होने लगी। किशनगढ़, रूपनगढ़, फतहगढ़ आदि स्थानों के प्रारम्भिक चित्रों में अजमेर शैली का पूर्ण प्रभाव नजर आता है। राज्याश्रय के कारण अजमेर के कलाकारों ने किशनगढ़ शैली के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। भिणाय, सांवर, मसूदा, जूनियाँ जैसे ठिकाणों में चित्रण की परम्परा ने अजमेर शैली के विकास में विशेष योगदान दिया।

राजस्थान की लघु चित्रकला में अजमेर की लघु चित्र शैली का योगदान- राजस्थान की चित्रकला में अजमेर की चित्र शैली ने भी अपने विकास की सीमाओं को ग्रहण किया है किन्तु कला के क्षेत्र में इस शैली की चर्चा कम होती है। राजस्थान की चित्रकला में अजमेर चित्र शैली का भी महत्वपूर्ण

योगदान है। अजमेर शैली का राजस्थान की अन्य चित्र शैलियों की भाँति महत्वपूर्ण योगदान रहा है तथाअजमेर भी चित्रकला का प्रमुख केन्द्र रहा। अजमेर ने आसपास के क्षेत्र को अपनी सांस्कृतिक गतिविधियों से प्रभावित किया एवं अन्य रियासतों के विपरीत राजनीतिक उथल-पुथल तथा धार्मिक प्रभावों के कारण यहाँ चित्रण के आयाम बदलते रहे। अजमेर शहर में जहाँ दरबार एवं सामंती संस्कृति का अधिक प्रभाव रहा, वहीं ग्रामों में लोक-संस्कृति तथा ठिकाणों में राजपूत संस्कृति का वर्चस्व बना रहा। अजमेर की चित्रकला परंपरा ने किशनगढ़ एवं रूपनगढ़ की चित्रकला को प्रभावित किया है।

अजमेर लघु चित्रकला शैली के चित्रों की विशेषताये- राजस्थान की चित्रकला में अजमेर की चित्रकला अपनी अलग ही पहचान रखती है। यहां के चित्रों में पुरुषाकृति लंबी, सुन्दर, संभ्रान्त एवं ओज को अभिव्यक्त करने वाली है। अजमेर की चित्रकला में किशनगढ़ की भाँति तीखापन और लालित्य नहीं है। श्वेत जामा, कमरबंद और मुगल मारवाड़ी मिश्रित पगड़ी से सुसज्जित पुरुषाकृतियाँ मारवाड़ स्कूल की सही पहचान कराती है। सर पर तुर्रा-कलंगी, सरपेच, कानों में कुंडल, बाली, गले में मोतियों का हार, माथे पर वैष्णवी तिलक, हाथ में तलवार, कमर में कटार तथा पैरों में मोचड़ी धारण किये अजमेर शैली के सामंत कला के उत्तम उदाहरण है।[8] अजमेर शैली के कलाकारों ने नारी अंकन में लावण्य युक्त लंबा इकहरा शरीर बीकानेर शैली की भाँति अंकित किया है। अजमेर शैली के चित्रों में स्त्री वेषभूषा के अंतर्गत महिलाओं को कंचुकी, पायजामा, लहँगा, ओढ़नी, पारदर्शी जामा, दुपट्टा पहने अंकित की गया है तो वहीं आभूषणों में चूड़ियाँ, टीका, बाली, बेसर-टेवटा, भुजबंद, नेवरी, पायजेब, जूरकारा आदि से सुसज्जित नारी का अंकन बारीकी और सधी हुई कलम से किया गया है। ठिकाणों की कला में राजस्थानी पहनावे का और शहरी कलम में मुगलई प्रभाव विशेषतः दर्शित होता है। अजमेर कलम की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि वह एक स्थान पर ही केन्द्रित नहीं रही, वरन् छोटे-छोटे ठिकाणों और साधारण जन तक भी उसकी पहुँच रही, जिसमें समय-समय पर सैकड़ों कलाकारों ने काम किया। यही एक ऐसी कलम रही जिसको हिन्दू, मुस्लिम और क्रिश्चियन धर्म का समान प्रश्रय मिला।

अजमेर के प्रमुख चित्रकार –अजमेर के चित्रकारों ने स्थानीय चित्रकला को पनपने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है जिनमें से जूनियाँ का चाँद, सांवर का तैय्यब, नॉद का रामसिंह भाटी, जालजी एवं नारायण भाटी खरवा से, मसूदा से माधो जी एवं राम तथा अजमेर के अल्लाबक्स प्रमुख चित्रकार है। अजमेर की महिला चित्रकारों में उस्ना और साहिबा स्त्री चित्रकारों का नाम भी विशेष उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार सैकड़ों चित्रकार अजमेर और अजमेर के आसपास के महत्त्वपूर्ण ठिकाणों में चित्रकारी करते रहे हैं। अजमेर शैली के सर्वाधिक चित्र कुँवर संग्राम सिंह संग्रहालय में उपलब्ध होते हैं, जिन पर कलाकार का नाम और तिथि अंकित है। सन् 1698 ई. में चाँद कलाकार द्वारा निर्मित राजा पाबूजी (सामन्त) अजमेर

शैली का सुन्दर व्यक्ति चित्र है। चाँद द्वारा निर्मित अन्य चित्र अजमेर शैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। राज्य के संग्रहालयों में भिणाय, मसूदा ठिकाणों के भी चित्र उपलब्ध हैं।

निष्कर्ष- राजस्थान की लघु चित्रकला में अजमेर चित्र शैली ने अपना एक अलग ही मुकाम हासिल किया है। यहां के चित्रकारों ने किशनगढ़, रूपनगढ़ जैसे क्षेत्रों में कला को प्रभावित किया। अजमेर की चित्रकला ने स्वयं में कई क्षेत्रों व शैलियों के गुणों को न केवल समाहित किया बल्कि उन्हे भी प्रभावित किया है। जिस प्रकार राजस्थान की लघु चित्रकला को निखारने में बीकानेर, मारवाड़, किशनगढ़, जोधपुर, जयपुर आदि शैलियों का योगदान है उसी प्रकार अजमेर की चित्रकला ने भी राजस्थान की चित्रकला में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है हालांकि अजमेर चित्रा शैली की विस्तृत व्याख्या कम ही देखने को मिलती है। अजमेर शैली के चित्रों में कई शैलियों के मिश्रित स्वरूप को आत्मसात कर अपनी नवीन चित्र विशेषतों को हमारे समक्ष रखा है। अतः हम कह सकते है अजमेर की चित्रकला ने राजस्थान की लघु चित्रकला के विकास को प्राप्त करने मे अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।

संदर्भ :-

1. अल्विट्रिप ट्यूरीज्म हिस्ट्री एण्ड बायोग्राफी : अजमेर का इतिहास, 20 मार्च 2018, https://alvitrips.com/%E0%A4%85%E0%A4%9C%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%B0-%E0%A4%95%E0%A4%BE-%E0%A4%87%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A4%85%E0%A4%9C%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%B0-%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%B8/
2. वाटसन, सी. सी. : गजेटियर ऑफ अजमेर- मेरवाड़ा, 1904 ई., पृ. सं.– 1.
3. प्रताप, डॉ. रीता : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2018, पृ .सं.- 209.
4. शर्मा, डॉ. दशरथ : अर्ली चौहान डायनिस्टी : अ स्टडी ऑफ चौहान पॉलिटिक्स, चौहान पॉलिटिक्स इंस्टीटयुट एण्ड लाइफ इन द डोमिनियस फ्रोम 800- 1316,1975.
5. प्रताप, डॉ. रीता : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2018, पृ सं.- 209
6. गोस्वामी, डॉ. प्रेमचंद : राजस्थान की लघु चित्र शैलियां, राजस्थान ललित कला अकादमी ,जयपुर, पृ. सं.– 52.
7. सिंह, कुँवर संग्राम: अजमेर पेंटिंग, श्री नान निनाद, कोलकाता पृ सं. – 146-148.

8. गोस्वामी, डॉ. प्रेमचंद : राजस्थान की लघु चित्र शैलिया, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, पृ .सं.– 51.